International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 3; May 2018; Page No. 34-36

स्वातंत्र्योंत्तर हिन्दी उपन्यास की विशेषताएँ

डॉ० दिलीप कुमार झा
फोर्ट ग्लास्टर विद्यालय (उ० म०), हावड़ा, पश्चिम बंगाल, भारत।

सारांश
स्वतंत्रता के बाद हिन्दी – उपन्यास के क्षेत्र में बदलाव आया। हिन्दी उपन्यासों की नवीनतम धारा को प्रयोगवादी उपन्यास या आधुनिकता बोध का उपन्यास कहा जा सकता है। औधौगिकरण, भ्रष्ट व्यवस्था, बदलते परिवेश, महानगरीय जीवन, अकेलापन निराशा, घोर अवसाद, तनाव आदि विषयों एंव भावों से जुड़कर हिन्दी – उपन्यास की वस्तु और प्रक्रिया नवीन होती गई। प्रस्तुत शोध पत्र में स्वातंत्र्योंत्तर हिन्दी उपन्यास की विशिषताओं पर विचार किया गया है।

मूल शब्द: हिन्दी–उपन्यास, औधौगिकरण, भ्रष्ट व्यवस्था, बदलते परिवेश।

प्रस्तावना
"स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी – उपन्यासों में परिर्वतन हुए। आज के उपन्यास में एक ओर मूल्यों के व्यापक विघटन, नैतिक मनोदृष्टि की गहन उत्क्रांति, व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावना के दर्शन होते है, वही दूसरे ओर उसमें लोकतंत्रीय भावना तथा स्वस्थ जीवन दृष्टि का भी उपन्यास मिल जाता है।" [1]
स्वातंत्र्योंत्तर हिन्दी उपन्यास – जगत में अनेंक अच्छे अच्छे उपन्यास और उपन्यासकार सामने आए है। उनमें धर्मवीर भारती का 'सूरज का सांतवां घोड़ा', अमृतलाल नागर का 'बूँद और समुद', मन्नू भंड़ारी का 'महाभोज', मोहन राकेश का 'अंधेरे बंद कमरे', जैनेन्द्र का 'दशार्क', श्रीलाल शुक्ल का 'रागदरवारी', कृष्णा सोबती का 'जिन्दगीनामा', विनोद कुमार शुक्ल की 'नौकर की कमीज', शिव प्रसाद सिंह का 'नीला चाँद', कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान', विष्णु प्रभाकर का 'अर्द्धनारीश्वर', अलका सरावगी का 'कलिकथा वाया वाइपास' आदि उपन्यास महत्वपूर्ण है।

'सूरज का सांतवां घोड़ा'
'सूरज का सांतवां घोड़ा' उपन्यास में धर्मवीर भारती ने प्रेमसंबंधों के माध्यम से हमारे समाज के समग्र जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। अंतिम अध्याय में मुल्ला कहता है – "देखो ये कहानियाँ वास्तव में प्रेम – कहानियाँ नही वरन् उस जिंदगी का चित्रण करती है जिसे आज का निम्न मध्यवर्ग जी रहा है। उसमें प्रेम से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है आज का आर्थिक संघर्ा नैतिक विश्रंखलता, इसलिए इतना अनाचार, निराशा, कटूता और अंधेरा मध्यमवर्ग पर छा गया है।"[2]

'बूँद और समुद'
स्वातंत्र्योंत्तर हिन्दी उपन्यास के विकास में अमृतलाल नागर का विशेष योगदान है। 'बूँद और समुद' उनका महत्वपूर्ण उपन्यास है। 'बूँद' व्यक्ति का प्रतीक है और 'समुद्र' समष्टि का। उनके परस्पर समन्वय की समस्या को लेखक ने इन शब्दों में प्रस्तुत किया है – "हर बूँद का महत्व है क्योंकि वही तो अनंत सागर, एक बूँद भी व्यर्थ क्यों जाय? कैसे यह बूँद अपने आपको महासागर अनुभव करे ? हर व्यक्ति आमतौर पर इस तरह अपनी बहुत छोटी– छोटी सीमाओं में रहता हुआ एक – दुसरे से अलग है। तब यह सागर कैसा है जिसमें हर बूँद अलग है ? व्यक्ति यदि इतना ही अलग है तो समाज बँधता क्योंकर है ? – यह विरोध भास लेकर मानव का जीवन चल ही कैसे सकता है।"[3]
"आज समाज में व्यक्तिवाद का माहौल बना हुआ है। ऐसा लगता है कि देश में, पृथ्वी पर केवल व्यक्ति रहता है, समाज नही। व्यक्ति केवल अपने दायरे में सोचता और कर्म करता। ऐसा लगता है जैसे हर व्यक्ति एक – एक द्वीप में अलग – अलग है।"[4]
ऐसी परिस्थिति में सामाजिक उद्धार का सपना तभी देखा जा सकता है, जब "सुख – दुख में व्यक्ति का व्यक्ति से अटूट संबंध बना रहे – जैसे बूँद से बूँद जुटी रहती है – लहरों से लहरे। लहरों से समुद्र बनता है – इस तरह बूँद में समुद्र समाया है।"[5] यही इस उपन्यास का मूल दर्शन है।

दशार्क
'दशार्क' जैनेन्द्र की जीवनदृष्टि का चरम विकास है। इसमें स्त्री – पुरूष संबंधों के बीच उभर आए अर्थ की भयावहता को अभिव्यक्त किया गया है। "मानवीय स्तर पर स्त्री – पुरूष के संबंधों के बीच घन की दखलंदाजी से पैदा हुई चिंता और उससे उपजे प्रश्न इस उपन्यास की उपलब्धि है और कदाचित हमारे समाज को अतिक्रमित करने वाली दृष्टि भी यही है।"[6]

रागदरबारी
श्रीलाल शुक्ल का 'रागदरबारी' (1968) एक विशिष्ट उपन्यास है। "इसकी विशि'टता दो अर्थों में है – (i) वह आज के उपन्यास की परंपरा से आगे बढ़कर अरूमानी दृष्टिकोण से आज के भारतीय जीवन की सारी विसंगतियों का उद्घाटन करता है। (ii) वह आघोपान्त व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करता है। इतना ही नही इसमें व्यंग्य और सपाटबयानी का अद्भुत साहचर्य दिखाई पड़ता है। इसकी सपाटबयानी में भी एक व्यंग्य है और व्यंग्य में भी सपाटबयानी है। लेखक की अनाविल दृष्टि ने बाँव के उभरे हुए जीवन के नए रूप को (जिसमें कोई नैतिकता नही, कोई मूल्य नही, कोई सामाजिक संबंध नही, कोई आंतरिक पीड़ा नही) शिवपालगंज के माध्यम से उभारा है।----- निश्चय ही यह उपन्यास अपने यथार्थवादी स्वभाव के कारण एक विशिष्ट कृति है जिसमें आज के गाँव के सारे मूल्यहीन व्यवहारादि (जिसमें छोटे से लेकर बड़े तक

सभी कही न कही, मुवतला है) को बहुत निर्ममता या कलागत निस्संगता के साथ साकार किया गया है।"[7]

"जिस ग्राम समाज को प्रेमचंद्र ने आजादी के पहले की पीड़ा में दर्ज किया वह फणीश्वरनाथ की कृतियों में आजादी के आसपास का संक्रमण और परिवर्तन के ऐतिहासिक दौर में व्यक्त हुआ। कमोवेश यही समाज बाद में श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का विषय बना लेकिन वह आजादी के बाद का विसंगत हो रहा समाज था, वह सामंती मूल्य लोकतंत्र का लवादा ओढ़कर सक्रिय हो रहे थे। और ग्रामीण जीवन पतनशीलतां की ओर जा रहा था।

'रागदरवारी' में पहली बार भारतमाता की उस छवि का विखंडन किया जो कवि सुमित्रानंदपंत के शब्दों में ग्रामवासिनी थी।"[8]

अंधेरे बंद कमरे

मोहन राकेश का अतिचर्चित उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे' (1961ई०) नई दिल्ली के अभिगत जीवन पर आधारित है। मोहन राकेश ने भुमिका में कहा भी है – "और जहाँ तक परिचय है, मैं सोचकर भी तय नही कर पा रहा कि इसे क्या कहूँ ? आज की दिल्ली का रेखाचित्र ? पत्रकार मधुसूदन की आत्मकथा ? हरवंश और नीलिमा के अंतर्द्वन्द्व की कहानी।"[9]

हरवंश इस उपन्यास का केन्द्रीय पात्र है, जो दाम्पत्य संबंधों की रागात्मकता, उ'मा और अर्थवत्ता की तलाश में भटक रहा है। हरवंश और नीलिमा माध्यम से पारस्परिक ईमानदारी, भावात्मक लगाव और मानसिक समदृष्टि में रिक्त दाम्पत्य जीवन का यहाँ प्रभावशाली चित्रण हुआ है। अपनी पहचान के लिए पहचानहीन होते जा रहे भारतीय अभिजातवर्ग की भौतिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक महत्वाकाक्षांओं के 'अंधेरे बंद कमरे' को खोलने वाला यह उपन्यास हिन्दी की विशि'ट कथाकृतियों में गण्य है।

'जिन्दगीनामा'

कृष्ण सोबती की औपन्यासिक यात्रा का चरम विकास 'जिन्दगीनामा' उपन्यास में दिखाई देता है। इसमें उन्होंने पंजाब का समग्र जीवन अपनी समूची संस्कृति और ऐतिहासिकता के साथ उभारा है। प्रेमचंद्र और रेणु के आद अपनी जातीय जिदंगी को इतनी तन्मयता से परखने की कला और किसी भी उपन्यास लेखक के पास नही दिखाई देती। यह उपन्यास अपने समय को अतिक्रमित करता हुआ हर युग में अपनी नवीनता का उद्घो'ा करता है, क्योंकि जिस संस्कृति और जीवन की गाथा इसमें है, वह कभी पुरानी पड़ने वाली नही है। शो'ाण और संघ'ार्ा की परंपरा समाज के गठन के तल में ही है जो क्रमशः घनी होती गई है। पर इस परंपरा में उसमें निहित प्रेम, करूणा और बंधुत्व गायब होते गए है। जिन्दगीनामा उसकी खोज का उपन्यास है और यही उसकी उपलब्धि है – "गीता पढ़कर भी तुम ऐसी बात करते हो चुनौती को स्वीकार करना तो कर्मयोगी का सबसे बड़ा धर्म है।" 10

'महाभोज'

'महाभोज' मन्नू भंडारी का महत्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें भारतीय राजनीति के कुत्सित होते चेहरे को बेपर्द किया गया है ---- महाभोज का आईना घूमते – घूमते भारतीय जनता की भीरूता, दयनीयता और उसके आदर्श तक जाता है और दिखाता है कि जब तक यथार्थ से सीधे भिड़ने की हिम्मत पैदा नही होती तब तक बदहाली अन्याय का समाधान नही है – "जी, बाधा बनकर विवाह निरर्थक हो जाता है। सार्थक बनने के लिए उसे विस्तार का केंद्र बनना होगा।"[11]

'नौकर की कमीज'

" 'नौकर की कमीज' के माध्यम से विनोद कुमार शुक्ल ने उपन्यास के पारंपरिक शिल्प को तोड़कर एक मध्यमवर्गीय क्लर्क की यातना को दिखाते हुए भारतीय व्यवस्था की विडम्बना को तार – तार कर दिया है। वास्तव में जीवन की मुश्किलों को एक खास कोण से देखने के कारण ही यह रचना एक विशि'ट उपलब्धि बनी है। उसकी उपलब्धि का एक खास पहलु 'उस कोण की निर्मिति है जो हर कलाकार के पास नही होती। इस कोण की खूबी यह है कि इसमें केवल मानवीय दुखे या अवसाद की व्यंजना और उसकी उद्देश्यपरकता से अलग, जीवनानुभवों को बड़ी आत्मीयता से खोला गया है' – यह बहुत आश्वासनदायिनी रचनाधर्मिता है जो जीवन से जुझने के स्थान पर उससे बहुत कुछ सीखने – समझने की ओर ले जामी है। उससे टकराने से अलग अपने अस्तित्व और बलाबल को तौलने की संघ'ार्शिलता कुंठित होकर टूट जाने के बजाय धैर्य और सहनशीलता के साथ जीवन के भीतर जाने वाला प्यार और हमेशा के लिए उदास हो जाने की जगह हँसने की जीवट – यह उपन्यास इन्ही अर्थो में विशि'ट है।"[12]

'कितने पाकिस्तान'

"कमलेश्वर यथार्थवादी कलाकार है। उनका उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' प्रयोग की दृष्टि में ताजा उदाहरण है। इसमें उनकी चिंताएँ बेहद मानवतावादी है। पूरे उपन्यास की केन्द्रीय चिंता युद्धों का निरंतर जारी रहता है। युद्ध तो केवल मृत्यु का पर्यायवाची है। यदि जनसातस्थ अतन के साथ जीवन जीना चाहता है तो फिर वे कौन सी शक्तियाँ हैं, जो युद्ध थोपती है। कमलेश्वर उन व्यक्तियों को 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास के जरिए कटघरे मे खड़ा करते है। कमलेश्वर की चिंताएँदेशकालिक नही, विश्वव्यापी है। उपन्यास में युद्ध का उन्माद चिंता का प्रश्न बनता है और शांति का प्रयास आशावाद को जन्म देते है।"[13]

'सूखा बरगद'

मंजूर एहलेशाम का 'सूखा बरगद' आजादी के बाद बदलते भारतीय समाज में कुछ नए प्रश्नों को ऐतिहासिक सामाजिक संदर्भो में उठाता है। धर्म, राजनीति, शिक्षा और संस्कृति से जुड़े तमाम सवाल उभरते है। प्रस्तुत उपन्यास में मुस्लिम मध्यमवर्ग की इच्छा – आकांक्षा, टूटन, घूटन और पराजय व्यक्त हुई है।

'कलिकथा वाया बाईपास'

अलका सरावगी का उपन्यास 'कलिकथा वाया बाईपास' निश्चित रूप से हिन्दी – उपन्यास – परंपरा की एक उपलब्धि है। जीवन के उतार – चढ़ावों के माध्यम से एक मनु'य के निरंतर परिवर्तन को उसके वर्गीय चरित्र के भीतर दिखाकर अलका सरावगी ने एक संस्कृति की संघ'ार्मय गाथा प्रस्तुत की है।

निष्कर्ष

भारत की स्वतंत्रता के बाद उपन्यास के क्षेत्र में बदलाव आया। हिन्दी – उपन्यास – साहित्य की नवीनतम धारा को प्रयोगवादी उपन्यास या आधुनिकता बोध का उपन्यास कहा जा सकता है। औधोगिकीकरण, भ्रष्ट व्यवस्था, बदलते परिवेश, महानगरीय जीवन, अकेलापन, निराशा, घोर अवसाद, तनाव आदि विषयों एंव भावों से जुड़कर हिन्दी – उपन्यास की वस्तु और प्रक्रिया नवीन होती गई। समकालीन दौर में उपभोक्तावाद, साम्प्रदायिकता, निम्नमध्यमवर्गीय जीवन, आदिवासी जीवन का तनाव, नारीमुक्त, पारिवारिक विघटन

आदि अनेक ऐसे विषय है, जिनसे जुड़कर समकालिन उपन्याससाहित्य और तीव्र गति से बढ़ा। हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी – विर्मश को चरम सीमा तक पहुँचाने वाली महिला उपन्यासकारों की भूमिका महत्वपूर्ण है। चित्रा मुद्गल की आवां, मृदुला गर्ग का 'कठगुलाब', मैसैयी पुष्पा का 'चाक' इत्यादि उपन्यासों में नारी अस्मिता से जुड़े विभिन्न मुद्दों को उठाया गया है। कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान', जगदीश चंद्र का 'नरक कुंड' नरेन्द्र कोहली का 'तोड़ो कारा तोड़ो' गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया' आदि उपन्यासकारों ने वर्तमान संदर्भो में उपन्यास को सामान्य जीवन के संदर्भो से जोड़कर समाज के सामने विभिन्न प्रश्न रखे है। आज उपन्यास का काम जीवन के इतने करीब है कि वह किसी न किसी रूप में हर व्यक्ति की समस्या से जुड़ा महसूस होता है।

संदर्भ

1. 'हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण' – महेन्द्र चतुर्वेदी पृ० 188।
2. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' – धर्मवीर भारती ।
3. 'बूदँ और समुद्र' – अमृतलाल नागर, राजकमल प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष 2006, पृ० 204।
4. वही, पृ० 205।
5. वही, पृ० 606।
6. 'हंस', जनवरी, 1979, पृ० 45।
7. 'हिन्दी उपन्यास, एक अन्तर्यात्रा' रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2001, पृ० 252।
8. 'प्रभात खबर' दैनिक पत्र, 22 अक्टूबर, 2011।
9. 'अंधेरे बंद कमरे' – मोहन राकेश, की भूमिका, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नई दिल्ली 2018, 16वाँ प्रकाशन, पृ० 176।
10. 'हंस', जनवरी, 1999, पृ० 44।
11. वही, पृ० 45।
12. वही, पृ० 46।
13. 'हिन्दुस्तान' दैनिक (रविवासरीय) , 30 अप्रील, 2000।